शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली

मूल्य परक प्रश्न पर आधारित अतिरिक्त सहायक सामग्री
वर्ष 2012–2013

विषय – हिंदी
कक्षा – बारहवीं

मार्गदर्शन :

डॉ0 सुनीता एस0 कौशिक
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल/परीक्षा)

समन्वय :

श्रीमती विनय वर्मा
प्रधानाचार्या
सर्वोदय कन्या विद्यालय, नारायणा

तैयारकर्ता :

1. सुश्री हेमलता	प्रवक्ता	सर्वोदय कन्या विद्यालय, नारायणा
2. सुश्री स्वर्णलता	प्रवक्ता	सर्वोदय विद्यालय, सैक्टर–12, आर0के0पुरम
3. सुश्री शगुन	प्रवक्ता	सर्वोदय कन्या विद्यालय, डी0 ब्लॉक, जनकपुरी
4. डॉ0 रेखा सिंह	प्रवक्ता	सर्वोदय कन्या विद्यालय, जे ब्लॉक, साकेत
5. श्री एम0पी0 सिंह	प्रवक्ता	सर्वोदय बाल विद्यालय, सैक्टर–2, आर0के0 पुरम

सूरदास की झोपड़ी

रात के दो बजे होंगे कि अकस्मात् सूरदास की झोपड़ी में ज्वाला उठी। लोग अपने –अपने द्वारो पर सो रहे थे। निन्द्रावस्था में भी उपचेतना जागती रहती है। दम–के–दम में सैकड़ो आदमी जमा हो गए। आसमान पर लाली छाई हुई थी, ज्वालाएँ लपक–लपककर आकाश की ओर दौड़ने लगी। कभी उनका आकार किसी मंदिर के स्वर्ण–कलश का–सा हो जाता था, कभी वे वायु के झोंकों से यों कंपित होने लगती थी, मानो जल में चॉद का प्रतिबिंब है। आग बुझाने का प्रयास किया जा रहा था पर झोपड़े की आग, ईर्ष्या की आग की भॉति कभी नही बुझती। कोई पानी ला रहा था, कोई यो ही शोर मचा रहा था। किन्तु अधिकांश लोग चुपचाप खड़ें नैराश्यपूर्ण दृष्टि से अग्निदाह को देख रहे थे, मानो किसी मित्र की चिताग्नि है।

प्र0 1 अकस्मात् हमारे आस–पास आग लग जाय तो हमारा क्या कर्तव्य बनता है

प्र0 2 आग बुझाने का प्रयत्न किया जा रहा था, कोई पानी ला रहा था, कोई यो ही शोर मचा रहा था, क्या मिल कर कार्य करने से शीघ्र समाप्त हो जाता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

इतने में सुभागी वहॉ आ पहुॅची। रातभर मंदिर के पिछवाड़े अमरूद के बाग में छिपी बैठी थी। वह जानती थी, आग भैरों ने लगाई है। भैरों ने उसपर जो कलंक लगाया था, उसकी उसे विशेष चिन्ता न थी क्योकि वह जानती थी किसी को इस पर विश्वास न आएगा। लेकिन मेरे कारण सूरदास का यो सर्वनाश हो जाए, इसका उसे बड़ा दुख था। वह इस समय उसको तस्कीन देने आई थी। जगधर को वहॉ खड़े देखा, तो झिझकी। भय हुआ, कही यह मुझे पकड़ न ले । जगधर को वह भैरों ही का दूसरा अवतार समझती थी। उसने प्रण कर लिया था कि अब भैरों के घर न जाऊॅगी, अलग रहूॅगी और मेहनत – मजूरी करके जीवन का निर्वाह करूॅगी। यहॉ कौन लड़के रो रहे हैं, एक मेरा ही पेट उसे भारी है न? अब अकेले ठोके और खाए, और बुढ़िया के चरण को धो–धोकर पिए, मुझसे तो यह नही हो सकता । इतने दिन हुए, इसने कभी अपने मन से धेले का सेंदुर भी न दिया होगा, तो मैं क्यों उसके लिए मरूॅ?

प्र0 3 सुभागी की तरह समाज में आज भी नारी की स्थिति कुछ हद तक दयनीय है । इस स्थिति से उवरने के लिए बहुत से कदम उठाये जा रहे है , आप अपने सुझाव दीजिए।

प्र0 4 मेरे कारण सूरदास का यों सर्वनाश हो जाए, इसका उसे बड़ा दुख था। यदि जाने अनजाने में आपके कारण किसी की हानि हो गई हो तो आप क्या कदम उठाते?

आरोहण

ग्यारह साल बाद भी कोई मुकम्मिल सड़क नही बन पाई थी माही के लिए अकेले जाना होता, तो अपने गॉव के लिए क्या सड़क क्या पगडंडी! मगर साथ कोई और हो तो सोचना पड़ता है कि अगला क्या सोचेगा! फिर साथ वाला भी कोई ऐसा–वैसा नही, शेखर कपूर था। एक तो उसके गॉड फ़ादर कपूर साहब का लड़का, दूसरे आई.ए.एस. ट्रेनी। अब ऐसे खासमखास मेहमान को पैदल पॉव अपने गॉव लिवा जाना अपनी और अपने गॉव की तौहीन कराना ही तो हुआ न!

प्र0 5 बहुत से गॉवों तक कोई पक्की सड़क नहीं बनी थी, मेहमान को ले जाते समय गॉव के विकास की जरूरत पर अपनी प्रतिकिया अभिव्यक्त करें।

प्र0 6 पहाड़ों पर सैलानी घूमने जाते है, उसके सौंदर्य को निहारते हैं पर उस सौंदर्य को प्रदूषित कर जाते हैं। आपकी दृष्टि से उन्हे कैसे बचाया जा सकता है?

चढ़ाई शुरू हो गई थी । प्रायः खड़ी चढ़ाई पहले तो पेड़ और पत्थरों के सहारे चढ़ते रहे वे, फिर रूक गए। ''क्या हुआ? आगे नही चढ़ पा रहा है।'' भूप ने ऊपर से पूछा, ''बस इत्ता भर पहाड़ीपन बचा रै ग्या ई? है ना्'' फिर से नीचे उसके पास आए। उन्होंने गले के मफ़लर की मजबूती परखी, फिर उसे कमर में बॉध कर दोनों छोरों को दिखाते हुए कहा, ''भुला, ले पकड़ इसको।'' फिर उन्होने शेखर की ओर देखा जो और भी नीचे खड़े हॉफ रहा था, '' पहले इसे चढ़ा लें, फिर आपको ...'' शेखर ने हामी भरी।

अब भूप आगे–आगे चढ़ रहे थें, उनकी कमर में बॅधे मफ़लर के छोर को पकड़े – पकड़े रूप पीछे–पीछे । बाप रे! बिना किसी आधुनिक उपकरण के, सिर्फ पेड़ों –पत्थरों के नाम मात्र के सपोर्ट पर शरीर का संतुलन बनाते हुए चढ़ना।

प्र0 7 आधुनिक उपकरणों और पीढ़ियों से चले आ रहे अनुभवों को मिलाकर पहाड़ो का जीवन सुगम हो सकेगा। तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्र0 8 पहाड़ो के जीवन को सुगम बनाने के लिए आपकी दृष्टि में सरकार का क्या सहयोग हो सकता है?

कौण कैता है, अकेला हूँ? ह्यॉ मॉ है, बाबा हैं , शैला है– सोये पड़े हैं सब। ह्या महीप है, बल्द है, मेरी घरवाली है, मौत के मुँह से निकाले गए खेत है, पेड़ है, झरणा है। इन पहाड़ों में मेरे पुरखों, मेरे प्यारों की आत्मा भटकती रहती है। मैं उनसे बात करता हूँ।''

''दादा! ये सब देख–देखकर, सुन–सुनकर मेरा कलेजा मुँह को आ रहा है। अभी से भी बची–खुची जिंदगी के साथ इंसाफ किया जा सकता है।''

भूप ने अपनी भीगी पलकें ऊपर उठाई, तो वे अंदर जल रही थी। ''भौत इंसाफ किया तुम सबी ने मेरे साथ–भौत। अब माफ करो भुइला। मेरी खुद्दारी को बखस दो। अब तो जिंदा रहणे तक न ई बल्द उतर सकदिन, न हम।''

प्र0 9 भूपसिंह इतने दुखों को उठाकर भी वहॉ से जाना नहीं चाहता, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहता है, क्या आप भी ऐसा सोचते है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्र0 10 भूपसिंह ने ऐसा क्यों कहा कि भुइला अब माफ करो, मेरी खुद्दारी को बखस दो ।'' क्या आज के परिपेक्ष्य में भूपसिंह का कथन उचित है?

''वो ई तो बता रहा था कि तेरी बाभी के आणे से खेती का काम कैसे बढ़ता गया। काम हम दोनों के बूते का न था। फिर उसकों बच्चा भी होनेवाला था, तो हम ले आए दूसरी औरत.... ए तेरी दूसरी बाभी। शैला से एक बेटा हुआ महीप। फिर एक दिन, महीप अभी नौ साल का ई था कि उसकी मॉ कों जाने क्या सूझा कि एक दिन हयांई से कूद गई सूपिण मॉ।''

प्रश्न 11 भूपदादा के दूसरे विवाह के नौ वर्ष बाद शैला ने पहाड़ से कूदकर आत्महत्या की। आज भी समाज में नारी की यह स्थिति है। पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्रश्न 12 महीप की शिक्षा और उसके पालन पोषण के लिए भूपदादा को क्या कोशिशें करनी चाहिए थी?

बिस्कोहर की माटी

बिसनाथ पर अत्याचार हो गया। जब वह दूध पीनेवाले ही थे कि छोटा भाई आ गया। बिसनाथ दूध कटहा हो गए। उनका दूध कट गया। मॉ के दूध पर छोटे भाई का कब्जा हो गया। छोटा भाई हुमक–हुमककर अम्मा का दूध पीता और बिसनाथ गाय का बेस्वाद दूध। कसेरिन दाई पड़ोस में रहती थी । बिसनाथ को उन्होने ही पाला–पोसा । सूई की डोरी से बनी हुई कथरी सुजनी कहलाती है। साफ़ – सफ़फाक सुजनी पर कसेरिन दाई के साथ लेटे तीन बरस के बिसनाथ चॉद को देखते रहते।

प्रश्न 13 एक छोटा बच्चा जिसके लिए मॉ की देखरेख की आवश्यकता है यदि उसका छोटा भाई या बहन आ जाए तो माता–पिता के स्नेह और देखभाल की अधिक आवश्यकता होती है। क्या आप भी ऐसा समझते है? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 14 कामकाजी महिलाओं के छोटे बच्चे जो या तो आया के द्वारा पाले जाते है या फिर कैच में ऐसे बच्चों की परवरिश तथा माता पिता द्वारा की गई परवरिश में अन्तर होता है। आप इस विषय में क्या सोचते है? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

बिस्कोहर में उन दिनों बिसनाथ संतोषी भइया के घर पर बहुत जाते थे। उनके ऑगन में जूही लगी थी। उनकी खुशबू प्राणों में बसी रहती थी। यों भी चॉदनी में सफ़ेद फूल ऐसे लगते है मानो पेड़ों, लताओं पर चॉदनी ही फूल के रूप में दिखाई पड़ रही हो। चॉदनी भी प्रकृति, फूल भी प्रकृति और खुशबू भी प्रकृति। वह औरत बिसनाथ को औरत के रूप में नहीं, जूही की लता बन गई चॉदनी के रूप में लगी। जिसके फूलों की खुशबू आ रही थी। प्रकृति सजीव नारी बन गई थी और बिसनाथ उसमें आकाश, चॉदनी सुगंधित सब देख रहे थे। वह बहुत दूर की चीज इतने नजदीक आ गई थी। सौंदर्य क्या होता है, तदाकार परिणति क्या होती है? जीवन की सार्थकता क्या होती है, यह सब बाद में सुना समझा, सीखा सब उसी के संदर्भ मे।

प्रश्न 15 बिस्कोहर की उस औरत ने लेखक को सौंदर्यानुभूति कराई। उसी प्रकार जीवन में कुछ बातें हमें सौन्दर्यानुभूति करा देती है । क्या आपको कभी इस प्रकार की अनुभूति हुई है? उसका आपके जीवन में क्या प्रभाव पड़ा?

प्रश्न 16 बाल्यावस्था के कोमल मनोभाव हमारे मन में इस प्रकार रच बस जाते हैं कि बड़े होने तक उन्हे भुलाना संभव नहीं होता। किसी व्यक्ति विशेष के प्रति मन में अवधारणा बना लेना कहा तक उचित है? तर्क संगत उत्तर दीजिए।

मॉ लू से बचने के लिए धोती या कमीज से गॉठ लगाकर प्याज बॉध देती। लू लगने की दवा थी कच्चे आम का पन्ना। भूनकर गुड़ या चीनी में उसका शरबत पीना, देह में लेपना, नहाना। कच्चें आम को भून कर या उबाल कर उससे सिर धोते थे। कच्चें आमों के झौंर के झौंर पेड़ पर लगे देखना, कच्चे आम की हरी गंध, पकने से पहले ही जामुन खाना, तोड़ना – यह गर्मी की बहार थी।

प्रश्न 17 आज के लोग दादी–नानी के घरेलू नुस्खें में विश्वास करते हैं तथा छोटी–मोटी बिमारियों में ये नुस्खें कारगर सिद्ध भी होते हैं। दादी–नानी के ये नुस्खें क्या पीढ़ियों के अंतर को पाटने में सहायक होते हैं ? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 18 स्वयं दुखी होकर भी मॉ बच्चों की सुरक्षा के लिए तरह – तरह के प्रयास करती है। मॉ के इस प्रेम और ममता की जीवन के निर्माण में क्या भूमिका है?

अपना मालवा खाऊ उजाडू सभ्यता में।

नागदा स्टेशन पर मीणा जी बिना चीनी की चाय पिलाते हैं। सारे जरूरी समाचार भी देते हैं। गई रात क्वालालंपुर में भारत के हारने से दुःखी थे। पूछने पर ही मौसम और खेती पर आए, ''हॉ अबकी पानी भोत गिर्‌यो। किसान कै कि हमारी सोयाबीन की फसल तो गली गई। पण अब गेहूँ–चना अच्छा होयगा।'' सार में उनने कहा और दुकान में लग गए। चाय और भजिया उनने अच्छा बनवा के दिया था। हम मियॉ –बीवी मजे में खाते–पीते उज्जैन पहुँच गए।

प्रश्न 19 **हमारी सोयाबीन की फसल तो गली गई। पण अब गेहूँ–चना अच्छा होयगा।'' आजकल खेती के लिए आधुनिक उपकरण उपलब्ध है । फिर भी किसान वर्षा पर निर्भर हैं किन्तु हौसला नही छोड़ता और आशावादी बना रहता है। उपर्युक्त कथन के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।**

प्रश्न 20 **हम सब जानते है खेल में हार जीत स्वभाविक है किन्तु किसी दूसरे देश द्वारा भारत के हारने पर हम दुखी तथा जीतने पर खुशी का अनुभव क्यो करते है? अन्तर्राष्ट्रीय खेलों का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

बाद में पाया कि उमर भी सत्तर की हो जाएगी। पहाड़ चढ़े नहीं जाएँगे। नदी – नाले पार नहीं होंगे। सूखती सुनहरी घास बुलाएगी लेकिन उसपर लेटकर रड़का नहीं जा सकेगा। मन से तो किशोर हो सकते हो । शरीर फिर वैसा फुर्तीला, लचीला और गर्वीला नहीं हो सकता। उमर जो ले गई उसे ले जाने दो । उसका जो है, रखे। अपना जो है उसे जिएँ।

प्रश्न 21 **बचपन के खेलकूद और क्रियाकलाप वृद्धावस्था में केवल यादें बन कर रह जाते है। मन किशोर हो सकता है किन्तु शरीर साथ देना बंद कर देता है। आपके परिवार में भी बुजुर्ग होंगे उनकी बचपन की यादों को सजीव करने के लिए आप क्या–क्या कर सकते हैं ?**

प्रश्न 22 **उम्र के साथ साथ अनुभव की कार्यक्षमता भी कमजोर हो जाती है। किन्तु मन में यदि उत्साह हो तो उम्र के प्रभाव को कम किया जा सकता है। आपके विचार से क्या यह संभव है?**

बरसों बाद हजारों साल की कहावत सच्ची हुई– मालव धरती गहन गंभीर, डग–डग रोटी पग–पग नीर। दक्षिण से उत्तर की ओर ढलानवाले इस पठार की सभी नदियों के दर्शन हुए। खूब पानी, खूब बहाव और खूब कृपा। नदी का सदानीरा रहना जीवन के स्त्रोत का सदा जीवित रहना है।

नदियों के बाद नबंर था तालाबों का। हमारे आज का इंजीनियर समझते है कि वे पानी का प्रबंध जानते है और पहले जमाने के लोग कुछ नही जानते थे क्योंकि ज्ञान तो पश्चिम के रिनेसां के बाद ही आया न! मालवा में विक्रमादित्य और भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए। वे और मालवा के सब राजा जानते थे कि इस पठार पर पानी को रोक के रखना होगा। सबने तलाव बनवाए, बड़ी–बड़ी बाबड़ियॉ बनवाईं ताकि बरसात का पानी रूका रहे।

प्रश्न 23 **मालवा के लिए कहावत थी डग–डग रोटी, पग–पग नीर। अधिक वर्षा होने से नदी नाले लबालब हो जाते थे। आपके शहर में यदि भारी वर्षा से स्थिति चिंताजनक हो जाए तो आपके विचार से उससे कैसे निपटा जाएगा।**

प्रश्न 24 **पहले जमाने में लोग पानी के प्रबंध के लिए तालाब बावड़ियॉ इत्यादि बनवाते थे। आप जल संरक्षण के कितने तरीके से परिचित है। वर्षा के जल को किस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है?**

मालव धरती गहन गंभीर नही है और क्यों नही है और क्यों यहॉ डग–डग पर नीर नही है। क्यों हमारे समुद्रों का पानी गरम हो रहा है? क्यों हमारी धरती के ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है? क्यों हमारे मौसमों का चक्र बिगड़ रहा है? क्यों लद्दाख में बरफ के बजाय पानी गिरा और क्यों बाड़मेर में गॉव डूब गए? क्यों यूरोप और अमेरिका में इतनी गर्मी पड़ रही है? क्योकि वातावरण को गर्म करनेवाली कार्बन डाईऑक्साइड गैसों ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। ये गैसे सबसे ज्यादा अमेरिका और यूरोप के विकसित देशों से निकलती है।

प्रश्न 25 **धरती का वातावरण गरम होता जा रहा है जो जनजीवन के लिए हानिकारक है। क्या इसे रोकना संभव है? आप अपने स्तर पर क्या–क्या प्रयास कर सकते है?**

प्रश्न 26 **पर्यावरण गरम होने से बाढ़, अकाल, अतिवृष्टि जैसी आपदाऍ आती रहती है। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते ऐसी आपदाओं से पीड़ित लोगो के प्रति आपका क्या कर्त्तव्य है?**

प्रेमघन की छाया स्मृति

ज्यों–ज्यों मै सयाना होता गया, त्यों–त्यों हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर मेरा झुकाव बढ़ता गया। क्वीन्स कॉलेज में पढ़ते समय स्वर्गीय बा.रामकृष्ण वर्मा मेरे पिता जी के सहपाठियों मे थे। भारत जीवन प्रेस की पुस्तकें प्रायः मेरे यहॉ आया करती थी पर अब पिता जी उन पुस्तकों को छिपाकर रखने लगे। उन्हें डर हुआ कि कहीं मेरा चित्त स्कूल की पढ़ाई से हट न जाए, मैं बिगड़ न जाऊॅ । उन्ही दिनों पं केदारनाथ जी पाठक ने एक हिन्दी पुस्तकालय खोला था। मैं वहॉ से पुस्तकें ला–लाकर पढ़ा करता।

प्रश्न 27 **घर का वातावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सहायक बनाया जा सकता है, तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

प्रश्न 28 **आजकल माता–पिता अपनी इच्छाओं के अनुरूप अपने बच्चों का भविष्य बनाना चाहते है? आप इस मत से कहॉ तक सहमत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

सुमिरिनी के मनके घड़ी के पुर्जे

पुर्जे खोलकर फिर ठीक करना उतना कठिन काम नही है, लोग सीखते भी है, सिखाते भी है, अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाज का इम्तहान पास कर आया हो उसे तो देखने दो। साथ ही यह भी समझा दो कि आपको स्वयं घड़ी देखना, साफ करना और सुधारना आता है कि नही।

हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई है, तुम्हें न चाबी देना आता है और न पुर्जे सुधारना तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते इत्यादि।

प्रश्न 29 धर्माचार्यों की बातों को ऑख मूँद कर मान लेना समाज की उन्नति के लिए कितना उचित है अपने उत्तर के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करें।

प्रश्न 30 अधकचरा ज्ञान किस प्रकार व्यक्ति को नुकसान पहुँचा सकता है ? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

बालक बच गया।

बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कृत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक ऑखों में दीख रही थी। कुछ खॉसकर, गला साफ कर नकली परदे के हट जाने पर स्वयं विस्मित हो कर बालक ने धीरे से कहा, 'लड्डू'। पिता और अध्यापक निराश हो गए। इतने समय तक मेरा श्वास घुट रहा था। अब मैने सुख सॉस भरी उन सबने बालक की प्रवृत्तियों का गला घोटने मे कुछ उठा नही रखा रखा था। पर बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह 'लड्डू' की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खड़खड़ाहट नही ।

प्रश्न 31 बच्चों को सामर्थ्य से अधिक ज्ञान का बोझ लादना उसके स्वाभाविक विकास में किस प्राकर वाधक है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्रश्न 32 दूसरों के समक्ष माता–पिता अपने बच्चों को अच्छा साबित करने के लिए उनके ज्ञान की नुमाइश लगाते है तथा दूसरों से तुलना करते है क्या यह बच्चों के विकास के लिए उचित है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

कच्चा चिट्ठा

कौवा भी काला होता है, कोयल भी काली होती है। दोनो में भेद ही क्या है। परंतु वसंत ऋतु के आते ही पता चल जाता है कि कौन कौवा है और कौन कोयल। संग्रहालय को देख कर बोला, ''बहुत कीमती संग्रह'' मैने पूछा कीमती से आपका क्या तात्पर्य है। रूपयों में बतावें तो समझ में आवे हॅसकर बोला ''रूपयों में बता दूँ तो तेरा ईमान डिग जाए।'' वैसे ही हॅसकर मैने जबाव दिया कि ''ईमान। ऐसी कोई चीज मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नही उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा–कौड़ी के हो ही नहीं सकता।''

प्रश्न 33 अपनी की गई गलती को स्वीकार कर लेना अच्छी आदत है क्या आपके समक्ष ऐसी परिस्थिति आयी है? आपने क्या महसूस किया?

प्रश्न 34 आपको जीवन में बहुत से मित्र मिलते है एक अच्छे मित्र होने के नाते आप अपने मित्र के लिए क्या कर सकते है?

संवदिया

बड़े भैया के मरने के बाद ही जैसे सब खेल खत्म हो गया। तीनों भाइयों ने आपस में लड़ाई–झगड़ा शुरू कर दिया। रैयतों ने जमीन पर दावे करके दखल किया, फिर तीनो भाइ गॉव छोड़कर शहर में जा बसे, रह गई बड़ी बहुरिया–कहॉ जाती बेचारी! भगवान भले आदमी को कष्ट देते है। नही तो एक घंटे की बीमारी मे बड़े क्यों मरते ?..... बड़ी बहुरिया की देह से जेवर खींच–छीनकर बॅटवारे की लीला हुई थी। हरगोबिन ने देखी है अपनी ऑखों से द्रौपदी चीर– हरण लीला! बनारसी साड़ी को तीन टुकड़े करके बॅटवारा किया था, निर्दय भाईयों ने। बेचारी बड़ी बहुरिया!

प्रश्न 35 वर्तमान समय में संयुक्त परिवार नष्ट होते जा रहे हैं । आज के परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार कितने सार्थक है ? विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 36 अपने स्वार्थ के लिए व्यक्ति रिश्तो का महत्व भूलता जा रहा है, आपसी प्यार, भाई चारें की भावना लागभग खत्म होती जा रही है। इस परिस्थिति से उभरने के लिए आपके विचार में क्या प्रयास किए जा सकते है।

राजा ने हुक्म दिया कि उसके राज में सब लोग ऑखें बंद रखेगें ताकि शांति मिलती रहे। लोगों ने ऐसा ही किया क्योकि राजा की आज्ञा मानना जनता के लिए अनिवार्य है। जनता ऑखें बंद किए–किए सारा काम करती थी और आश्चर्य की बात यह कि काम पहले की तुलना में अधिक और अच्छा हो रहा था। फिर हुक्म निकला कि लोग अपने अपने कानों मे पिघला हुआ सीसा डलवा लें क्योंकि सुनना जीवित रहने के लिए बिलकुल जरूरी नहीं है। लोगों ने ऐसा ही किया और उत्पादन आश्चर्यजनक तरीके से बढ़ गया।

प्रश्न 37 अपने हितों के लिए दूसरों का अहित करना कहॉ तक उचित है? अपने तर्कपूर्ण उत्तर देकर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 38 समाज में लोग मूर्ख न बने, इसके लिए शिक्षित होना आवश्यक है। लोग शिक्षित बने इसके लिए आप कौन कौन से कदम उठायेगें ?

गॉधी नेहरू और यासर अराफात

उस वक्त बाजीगर, सिर के बल खड़ा अपना सबसे चहेता करतब बड़ी तन्मयता से दिखा रहा था। यह दृश्य देखते ही बड़ा पादरी तिलमिला उठता है। माता मरियम का इससे बड़ा अपमान क्या होगा? आगबबूला, वह नट की ओर बढ़ता है कि उसे लात जमाकर गिरजे से बाहर निकाल दे।

वह नट की ओर गुस्से से बढ़ ही रहा है तो क्या देखता है कि माता मरियम की मूर्त्ति अपनी जगह से हिली है, माता मरियम अपने मंच पर से उतर आई और धीरे – धीरे आगे बढ़ती हुई नट के पास जा पहुॅची हैं और अपने ऑचल से हॉफते नट के माथे का पसीना पोंछती उसके सिर को सहलाने लगी है।

प्रश्न 39 **ईश्वर का सच्चा भक्त बनने के लिए नियमानुसार पूजा–पाठ करना आवश्यक नही। क्या आप इससे सहमत है? तर्कपूर्ण उत्तर दें।**

प्रश्न 40 **बचपन में हॉफते हुए बच्चों को 'मॉ' प्यार से सहलाकर उसकी सारी थकान व परेशानियॉ मिटा देती है। बड़े होने पर हम मॉ को भूल जाते है। क्या यह उचित है? अपने विचार प्रकट कीजिए।**

जहॉ कोई वापसी नही ।

प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग अपना घरवार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते है। किन्तु आफत टलने ही वे दोबारा अपने जाने–पहचाने परिवेश में लौट आते है। किन्तु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी आने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औद्योगीकरण की ऑधी में सिर्फ मनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न 41 **प्रकृति के असंतुलन से बाढ़ या भूकम्प आदि त्रासदी आती है। प्रकृति के संतुलन को बनाने में हम कैसे मदद कर सकते है?**

प्रश्न 42 **आधुनिक प्रगति के कारण जड़ जमीन से उखड़े लोगों को बसाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते है? आप अपने सुझाव दीजिए।**

दूसरा देवदास

संभव से कुरते की जेब में हाथ डाला । एक रूपए का नोट तो मिल गया चवन्नी के लिए उसे कुछ प्रयत्न करना पड़ा। चवन्नी जेब में नही थी। संभव ने थैला खखोरा । पुजारी ने उसकी परेशानी ताड़ ली।

''इधर आओं, हम दे रेजगारी''

संभव ने झेंपते हुए एक का नोट जेब में रखकर दो का नोट निकाला। पुजारी जी ने चरणामृत दिया और लाल रंग का कलावा बॉधने के लिए हाथ बढ़ाया।

संभव का ध्यान कलावे की तरफ़ नहीं था। वह गंगा जी की छटा निहार रहा था। तभी एक और दुबली नाजुक–सी कलाई पुजारी की तरफ बढ़ आई। पुजारी ने उसपर कलावा बॉध दिया। उस हाथ ने थाली में सवा पॉच रूपये रखें।

प्रश्न 43 आज विज्ञान इतनी प्रगति कर रहा है। शिक्षित होकर भी लोग 'कलावा' बॉधने जैसी मान्यताओं को मानते है। इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

प्रश्न 44 ईश्वर को चढ़ावा चढ़ाने में भी पैसे का लेन–देन चलता है। क्या अधिक पैसे दान देने से ईश्वर की अधिक कृपा होती है? इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

कुटज

इन्हीं में एक छोटा सा, बहुत ठिगना पेड़ है, पत्ते चौड़े भी है, बड़े भी हैं। फूलों से तो ऐसा लदा है कि कुछ पूछिए नहीं। अजीब सी अदा है, मुस्कराता जान पड़ता है। लगता है, पूछ रहा है कि क्या तुम मुझे भी नहीं पहचानते? पहचानता तो हूँ, अवश्य पहचानता हूँ। लगता है बहुत बार देख चुका हूँ। पहचानता हूँ उजाड़ के साथी, तुम्हें अच्छी तरह पहचानता हूँ। नाम भूल रहा हूँ। प्रायः भूल जाता हूँ। रूप देख कर प्रायः पहचान जाता हूँ, नाम नहीं याद आता। पर नाम ऐसा है कि जब तक रूप के पहले ही हाजिर न हो जाय तब तक रूप की पहचान अधूरी रह जाती है।

प्रश्न 45 समाज लोगों को प्रायः उनके अच्छे कार्य के लिए याद करते हैं। इस विषय में आप अपने विचार प्रकट करें।

ऐसे व्यक्ति मरकर भी अमर हो जाते है।

प्रश्न 46 कुटज के स्वालंबन की शक्ति उसके ठिगने कद को बड़ा कर देती है। इससे हमें क्या प्रेरणा मिलती है।

यह जो मेरे सामने कुटज का लहराता पौधा खड़ा है वह नाम और रूप दोनो में अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा कर रहा है। इसलिए यह इतना आकर्षक है । नाम है कि हजारों वर्ष से जीता चला रहा है। कितने नाम आए और गए। दुनिया उनको भूल गई, वे दुनिया को भूल गए। मगर कुटज है कि संस्कृति का निरंतर स्फीयमान शब्दराशि में जो जमके बैठा, सो बैठा ही है। और रूप की तो बात ही क्या! बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारूण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रूद्ध अज्ञात जलस्त्रोत से बरबस रसखीच कर सरस बना हुआ है। और मुर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरि कांतार में भी ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी–शक्ति है!

प्रश्न 47 विपरीत परिस्थितियों में भी हम दृढ़तापूर्वक परिस्थितियों का सामना करते हुए किस प्रकार हम आगे बढ़ सकते हैं? अपने विचार प्रकट करे।

प्रश्न 48 कुटज के माध्यम से जीवन के प्रति सकारात्मक सोच हमें किस प्रकार प्रेरणा देती है।

दुख और सुख तो मन के विकल्प है। सुखी वह है जिसका मन बस में है। दुखी वह है जिसका मन परवश है । परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दॉत निपोरना, चाटुकारिता, हॉ–हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है वही दूसरों के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है। दूसरों को फॅसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वशी है। वह वैरागी है। राजा जनक की तरह संसार में रहकर संपूर्ण भोगो को भोग कर भी उनसे मुक्त है । जनक की भॉति वह घोषणा करता है– 'मैं स्वार्थ के लिए अपने मन को सदा दूसरे के मन में घुसाता नहीं फिरता, इसलिए मैं मन को जीत सका हूॅ, उसे वश में कर सका हूॅ।

प्रश्न 49 अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए आज मनुष्य खुशामद करना चाटुकारिता आदि का रास्ता अपना रहा है । क्या यह कदम समाज के हित में है? विचार अभिव्यक्त करे।

प्रश्न 50 लेखक कुटज के माध्यम से मानव मुल्यों की पैरवी करता नजर आ रहा है। क्या आप इस कथन से सहमत है?

:: इति ::

उत्तर

सूरदास की झोपड़ी

उ0 1 आग में यदि लोग घिरे हो तो हमें बचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

पानी, बालू रेत को आग के ऊपर फेकना चाहिए।

जोर–जोर से शोर मचाना चाहिए।

अग्नि शमन दफ्तर में तुरन्त सूचना देनी चाहिए।

भीड़ को हटाने का प्रयत्न करना चाहिए।

उ0 2 मिलकर कार्य करने से सद्भाव व अपनत्व की भावना का विकास होता है।

घंटो का काम मिनटों में समाप्त हो जाता है।

मिलकर प्रयत्न करने से बड़े से बड़ा काम छोटा दिखाई देता है।

उ0 3 स्त्रियों को शिक्षा के अवसर देने चाहिए ।

स्त्रियों को समानता का अधिकार देना चाहिए।

घर के प्रमुख फैसलों पर स्त्रियों की राय लेनी चाहिए।

उसे उन्नति के अवसर देने चाहिए।

उ0 4 हर व्यक्ति को दूसरे का दुख अपना दुख समझना चाहिए।

उसे परिस्थिति से उबरने का हौंसला देना चाहिए।

स्थिति के अनुसार पूरे साहस के साथ उसकी मदद करनी चाहिए।

उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

आरोहण

उ0 5 गॉवों तक पक्की सड़कें न होने पर हमें शर्मिदंगी का एहसास होता है । पक्की सड़के गॉव के विकास का प्रतीक है।

पक्की सड़कों की सहायता से गॉव देश के देश के बाकी हिस्सों से जुड़ेंगे।

दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाएगी।

विद्यालय, कॉलेज आदि कुछ दूरी पर होंगे तो वहॉ भी आसानी से जा सकेंगे। यातायात की सुविधाऍ मिलेंगी।

अस्वस्थ होने पर बेहतर चिकित्सा सुविधाऍ प्राप्त हो सकेंगी।

उ0 6 प्लास्टिक का सामान व पोलीथीन के बैग का प्रयोग नही करेंगे।

कूड़ा कचरा इधर – उधर नहीं फैलाकर पहाड़ों के सौन्दर्य को प्रदूषित होने से बचाऍगे।

स्वयं पेड़ लगा कर आएँगे तथा वहाँ के स्थानीय निवासियों को जंगल के लाभ बताकर भूमि के कटाव व प्रदूषण को रोकने में सहायता करेंगे।

पेड़ों व शिलाओं पर पेन्ट या अन्य रासायनिक पदार्थों से नाम न लिख कर उन्हें प्रदूषण से बचाएँगे।

उ0 7 आधुनिक उपकरणों व अनुभवों के मिलन से जीवन सुगम हो सकेगा।

खड़ी चढ़ाई पर मोटी रस्सी या पाइपों को लगाया जा सकता है।

पहाड़ों पर खेती करना अधिक सुगम हो सकता है।

आधुनिक शैली के द्वारा आवासीय जनजीवन की गुणवत्ता को सुधारा जा सकता है।

आधुनिक उपकरणों और पीढ़ियों से चले आ रहे अनुभवों के द्वारा चिकित्सा सेवाओं को उन्नत किया जा सकता है।

उ0 8 सड़कें और रास्ते पक्के हो सकते है।

पहाड़ों पर अंधेरा जल्दी हो जाता है, तब चढ़ना उतरना खतरनाक होता है, इसलिए बिजली का समुचित प्रबंध करना।

मूलभूत आवश्यकताओं जैसे खाद्य–सामग्री दवाईयाँ, वस्त्र आदि की पूर्ति करना ।

यातायात के साधनों का प्रबंध करना और शिक्षा के विकास का उचित प्रबंध।

खेती के साथ जीविका के नए साधनों का बढ़ावा देना।

उ0 9 भूपसिंह इतने दुखों को उठाकर भी अपनी जड़ों से जूड़ा रहना चाहता है हम भी यही सोचते है, क्योंकि सभी को अपनी मिट्टी से प्रेम होता है।

वहाँ अपने पुरखों का आशीर्वाद व अपने आस–पास की हर चीज से जुड़े रहने का एहसास होता है।

यदि कुछ कर सकने की योग्यता है तो वहाँ रहकर भी काम करने से समाज व अपने गाँव की उन्नति की जा सकती है।

उ0 10 भूपसिंह वहाँ सम्मान से सिर उठाकर जीता है, बिना किसी के आश्रय के वहाँ रहता है।

वहाँ सभी को पहचानता है, वहाँ अपनत्व मिलता है।

परिश्रम करके फसल उगाकर बिना परवश हुए सम्मानपूर्वक जिया जा सकता है।

प्रत्येक कठिनाईयों का सामना करते हुए आत्मविश्वास से आगे बढ़ा जा सकता है।

उत्तर 11 आज भी नारी को समाज में उतना सम्मान नही मिलता जितने कि वह अधिकारिणी है।

अपमान, तिरस्कार का रूखापन झेल नही पाती तो स्वाभिमानिनी नारियाँ आत्महत्या कर लेती है।

घर के अहम् फैसलों पर उनकी राय नहीं ली जाती।

दूसरी पत्नी लाकर नारी की दशा और भी अधिक शोचनीय कर दी जाती है।
अधिक बीमार होने पर स्त्रियों की समुचित देखभाल नहीं की जाती है।
ऐसी शोच और नारियों की इस दशा के कारण कोई भी समाज उन्नति नहीं कर सकता ।

उत्तर 12 पुत्र की शिक्षा और पालन–पोषण की पूरी जिम्मेदारी पिता की होती है।
उसे विद्यालय में भेजते, उसकी शिक्षा संबंधी हर कठिनाई दूर करने का प्रयत्न करते ।
उसकी भावनाओं को समझने के लिए उससे अधिक से अधिक बातें करते व उसे अपने साथ रखते ।
उसे मजदूरी करने से रोक कर अनुनय विनय से अपने घर लाते। जब तक प्रयत्न करते रहते तब तक महीप घर न आ जाता।
पुत्र से मित्रवत व्यवहार करके उसकी समस्याओं को दूर करने व इच्छाओं को पूरा करने का प्रयत्न करते।

बिस्कोहर की माटी

उत्तर 13 छोटे भाई या बहन के आ जाने से बच्चा स्वयं को असुरक्षित, उपेक्षित महसूस करता है। उसमे ईर्ष्या की भावना पनपती है, चिड़चिड़ा हो जाता है, गलत हरकतें करके ध्यान आकर्षित करना चाहता है। अतः माता पिता का दुलार और संरक्षण ही उसे जिम्मेदारी का अहसास करा सकता है तथा परिवार में नए सदस्य को अपनाने की भावना जाग्रत की जा सकती है।

उत्तर 14 आया या क्रैच में बच्चे अकसर उपेक्षित होते हैं। उनमें प्यार तथा अपनेपन की कमी होती है। खान पान के प्रति उपेक्षित होते है। असुरक्षा की भावना आ जाती है। जबकि माता पिता बच्चे का पूरा ध्यान रखते है उनके संरक्षण में बच्चे का बौद्धिक, भावनात्म्क तथा शारीरिक विकास भली प्रकार होता है।

उत्तर 15 बचपन की कुछ मधुर यादें जीवन भर याद रहती है । जो समय समय पर सोच और नजरिए को दिशा देती रहती है। बड़े होने पर चाहे जीवन में उसका महत्व न रहे किन्तु सौन्दर्यबोध करा देती है। जीवन सुखद हो जाता है। सकारात्मक सोच के साथ साथ चीजों को देखने व समझने का ज्ञान हो जाता है।

उत्तर 16 किसी के विषय में कोई अवधारणा बना लेना सर्वथा उचित नही है। व्यक्ति हमें किस परिस्थिति में मिलता है यह उस पर निर्भर करता है। समय के साथ साथ बातों के

मायने भी बदलते रहते हैं। कई बार परिपक्वता आने के साथ अवधारणाएं गलत साबित हो जाती है।

उत्तरः 17 काफी हद तक सहायक हो सकते है इसमें बड़ो के प्रति सम्मान की भावना बढ़ती है। उनके अनुभवों का लाभ मिलता है, प्रेमभाव व लगाव बढ़ता है। परम्पराओं से जुड़े रहते है अच्छे संस्कार मिलते है।

बड़े बुजुर्ग सम्मान महसूस करेंगे तथा उपेक्षित नहीं होंगे।

उत्तरः मॉ की अहम् भूमिका है – सुरक्षा की भावना आती है।

आत्म विश्वास बढ़ता है। आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न होती है। परिस्थितियों से जूझने की क्षमता आती है। भावनात्मक और बौद्धिक विकास होती है। जीवन को सही ढंग से जीने की प्रेरणा मिलती है।

अपना मालवा खाऊ उजाडू सभ्यता में।

उत्तर 19 किसान भाग्य के भरोसे न रहकर अपने परिश्रम पर विश्वास रखता है । वह आशावान बना रहता है तथा हिम्मत नहीं हारता । विपरीत परिस्थितियों में भी हालात से जूझता रहता है। एक फसल के नष्ट होने पर भी दूसरी फसल तैयार करता है। उसका यह आशावादी दृष्टिकोण उसमें उम्मीद जगाए रखती है। सोच यदि सकारात्मक हो तो हिम्मत बनी रहती है।

उत्तर : देश की प्रति प्रेमभावना हमें हारने पर दुख और जीतने पर खुशी का अहसास कराती है।

हम स्वयं को खेलों के साथ जोड़ लेते है तथा देश की हार को स्वयं की हार तथा जीत को स्वयं की जीत समझने लगते है।

खेलों से भाईचारे की भावना बढ़ती है। एकता की भावना प्रबल होती है।

खेलों के प्रति लगाव पैदा होता है तथा जागरूकता आती है । दूसरे देश की संस्कृति को जानने का अवसर मिलता है।

उत्तर 21 उनके बचपन के किस्से कहानियॉ सुनना, उनकी प्रत्येक बात पर ध्यान देना। उनके साथ उनके बचपन के प्रिय खेल खेलना, उनकी प्रिय चीजों को उपहार में देना, अपने मित्रों से उनका परिचय कराना ।

उत्तर 22 हॉ यह संभव है उनमें इच्छा शक्ति जगाकर किसी भी उम्र में नई चीज सीखी जा सकती है। यह प्रेरणा देकर उन्हे नई तकनीकी तथा नई बातों से अवगत कराकर, अपने

साथ घुमाफिरा कर खाने की नई चीजों से अवगत कराकर, साथियों के साथ जुगलबंदी तथा समव्यस्कों के साथ सैर–सपाटा तथा उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखकर।

उत्तर 23 वर्षा से पूर्व ही सड़कों की मरम्मत व नालों की सफाई करा लेनी चाहिए।

सड़कों पर कूड़ा करकट जमा नहीं होने देना चाहिए।

भारी वर्षा होने पर व्यक्तिगत वाहनों का प्रयोग करना चाहिए।

जहॉ पानी भर गया हो या भरने की संभावना हो वहॉ से लोगों को सुरक्षित स्थान पर भेज देना चाहिए।

जहॉ आवश्यक हो बिजली की सप्लाई बंद कर देनी चाहिए।

राहत और बचाव कार्य करने चाहिए।

उत्तर 24 घरों की छतों पर जल संग्रह करके पाइप द्वारा किसी टैंक में एकत्र करके तथा फिल्टर करके भूतल पर जल संग्रह किया जा सकता है। भूमि के अंदर भी जल संग्रह किया जा सकता है तथा उसे फिल्टर करके उपयोगी बनाया जा सकता है।

पुराने तालाब बावड़ियें को फिर से उपयोगी बनाया जा सकता है।

उत्तरः 25 धरती के वातावरण को गरम होने से काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके लिए औद्योगिक विकास और पर्यावरण में संतुलन बनाना होगा। बड़ी संख्या में पेड़ पौधे लगाने होगे। पेड़ो से भूमि के कटाव को बचाया जा सकता है। वस्तुओं का पुर्नचक्रण (रिसाईकिल), व्यक्तिगत वाहनो का कम प्रयोग, पब्लिक वाहनो का प्रयोग, बिजली के उपकरणो का कम प्रयोग, प्राकृतिक उर्जा का प्रयोग। साथ ही लोगों में चेतना उत्पन्न करना।

उत्तर 26 सर्वप्रथम सुरक्षित स्थान पर पहुॅचाना । खान–पान की सुविधाऍ उपलब्ध कराना, प्राथमिक चिकित्सा देना यदि आवश्यक हो तो अस्पताल की सुविधाऍ उपलब्ध कराना, पुर्नस्थापना के प्रयास करना, बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना और दैनिक प्रयोग की चीजों की व्यवस्था करना।

प्रेमघन की छाया स्मृति

उत्तर 27 बच्चों के विकास के लिए अच्छी पुस्तके लाकर देना कहानी, नाटक आदि विषयों पर बच्चो के साथ चर्चा करें।

बच्चों की रूचियों का ध्यान रखते हुए उनकी इच्छाओं का सम्मान करें।

गलत आदतों को खत्म करने के लिए आपसी प्रेम व सद्भावना का वातावरण बनाए।

उनमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भता की भावना के लिए मित्रवत् व्यवहार करे।

उत्तर 28 बच्चों का आत्मविश्वास डगमगा जाता है, जिससे वह आत्मकेन्द्रित हो जाता है।
बच्चे उदंड, विद्रोही बन जाते है, जिससे वे समाज के साथ समन्वय नही कर पाते।
अपने कार्य में आनंद नही ले पाते इससे उनकी कार्यक्षमता का ह्रास होता है।
इससे स्वयं निर्णय लेने की क्षमता में कमी आ जाती है। इन सबसे बच्चों का, समाज व देश का अहित होता है । अतः हमें अपने बच्चों की रूचि के अनुरूप उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देना चाहिए।

सुमिरिनी के मनके घड़ी के पुर्जे

उत्तर व्यक्ति अपनी इच्छा, श्रद्धा और आस्था के अनुरूप धर्म अपनाता है सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़कर उसमें धैर्य, क्षमा, भाईचारा, एक दूसरे के धर्म का आदर करना सिखाता है। मानवधर्म ही धर्म है जो सहयोग, सद्भावना, दया, करूणा, सत्य, अहिंसा और शांति का पाठ सिखाता है। ऐसे धर्म के लिए वेद शास्त्रज्ञ होना आवश्यक नही है।

उत्तर 30 अधकचरा ज्ञान काम को सुधारने के बजाय बिगाड़ देता है।
समाज में शर्मिन्दा होना पड़ता है।
हॅसी का पात्र बन जाता है।
आत्मविश्वास में कमी आती है।

बालक बच गया।

उत्तर 31 बच्चों पर सामर्थ्य से अधिक बोझ लादना अत्यन्त हानिकारक है क्योंकि इससे बालक का स्वाभाविक विकास रूक जाएगा । बालक उसे मन से स्वीकार नहीं करता यह ज्ञान उसे अपने ऊपर लादा हुआ प्रतीत होता है। इससे शिक्षा के प्रति अरूचि, आत्मविश्वास में कमी और सोचने समझने की क्षमता अवरूद्ध होती है।

उत्तर 32 रटे–रटाये उत्तर बालोचित नहीं होते। रटे–रटाये उत्तर बाल सुलभ प्रवृत्तियों को समाप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ते । उम्र और योग्यता से अधिक कठिन प्रश्नों के उत्तर रटवाना बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का गला घोटना है। बच्चों पर शिक्षा लादनी नही चाहिए बल्कि उनके मानस में शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने वाले बीज डालने चाहिए।

कच्चा चिट्ठा

उत्तर 33 ऐसी परिस्थिति में स्वीकार करने की भावना, सही गलत की पहचान, आत्मसम्मान की भावना में वृद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, पश्चाताप की भावना, दूसरों की दृष्टि में ऊँचा उठने के अतिरिक्त जिम्मेदारी की भावना का विकास।

उत्तर 34 समय पड़ने पर सहायता करना।
दूसरों के सामने मजाक न बनाना।
मित्रों के गुणों की प्रशंसा करना ।
अवगुणों को दूर करना।

संवदिया

उत्तर 35 आज समाज से मूल्य समाप्त हो रहे है ऐसे में संयुक्त परिवारों की आवश्यकता है । कामकाजी महिलाओं के लिए संयुक्त परिवार का बहुत महत्व है। संयुक्त परिवार में ही बुजुर्गों का संरक्षण और बच्चों में अच्छे संस्कार पनपते है। अकेलेपन की भावना और तनाव से मुक्ति मिलती हैं रिश्तों में मजबूती आती है। सुरक्षा की भावना आर्थिक आय में वृद्धि और समस्याओं का समाधान भी संयुक्त परिवार में ही संभव है।

उत्तर 36 मिलजुलकर काम करने की भावना होनी चाहिए। समय–समय पर रिश्तेदारों से मेलमिलाप होना चाहिए। बड़ों के प्रति आदर सम्मान अतिथि सत्कार की भावना हो। एक दूसरें की भावनाओं और विचारों को महत्व देना व समझना चाहिए। त्योहारों को मिलजुल कर मनाना, पारिवारिक उत्सव में एक दूसरे की मदद करने का भाव होना।

उत्तर 37 अपने हित के लिए हमें दूसरों का अहित बिलकुल नही करनी चाहिए।
दूसरों का अहित करने वाला खुद भी दुखी रहता है।
केवल स्वार्थी मानव दूसरों का अहित करते हैं।
हमें अच्छा मानव बनकर दूसरों का हित करना चाहिए।
अपने हित से पहले दूसरों का हित सोचना चाहिए।

उत्तर 38 शिक्षित होने से लोगों को मूर्ख नही बनाया जा सकता।
श्रमिक वर्ग को सांध्यकालीन कक्षाओं में जाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
निर्धन वर्ग के बच्चों को विद्यालय जाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
घर के आस–पास से बुजुर्गो व बेसहारा बच्चों का एकत्रित करके पढ़ा सकते है।

गॉधी नेहरू और यासर अराफात

उत्तर 39 ईश्वर का सच्चा भक्त बनने के लिए नियमानुसार पूजा–पाठ करना आवश्यक नही । केवल मन को सच्चा व पवित्र बनाना होगा।

कर्मशील बनना होगा।

उपरी मन से ईश्वर भक्ति करना, मन में दुराचारी होना सही नही।

उत्तर 40 यह सही है कि बचपन में मॉ हमारे सारे काम करती है। बिना किसी स्वार्थ के हमारी सेवा करती है। और बड़े होने पर हम मॉ को भूल जाते है यह उचित नहीं ।

हमें भी मॉ की सेवा करनी चाहिए।

उसके सुख और दुख का ध्यान रखना चाहिए।

जहॉ कोई वापसी नही ।

उत्तर 41 वनों की कटाई को रोकने का प्रयत्न करें। कटे हुए वृक्षों की जगह नये वृक्ष लगवाये जाए, जिससे शुद्ध हवा मिल सके एवं भूमि का कटाव रूके।

प्राकृतिक संतुलन के लिए प्राकृतिक स्त्रोतों का अधिक प्रयोग करें : जैसे सौर ऊर्जा, पवन चक्की आदि।

नदियों में कुड़े कचरे को न बहाये।

पर्यावरण के अनुकुल वस्तुओं का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

उत्तर 42 सकारात्मक सोच के साथ खुले दिल से उनका स्वागत करना चाहिए ताकि उन्हें अपनी जगह छोड़कर आने का दुख कम हो।

उनको रोजगार दिलवाने में सहायता करें।

उनके घर आदि बनाने में आने वाली कठिनाइयों का सामर्थ्यनुसार दूर करने का प्रयत्न करें।

उनके बच्चों को शिक्षा, बीमारी में चिकित्सा आदि की सुविधाए मुहैया करवाए।

दूसरा देवदास

उत्तर 43 शिक्षित होकर भी लोग संस्कृति से जुड़े रहना चाहते है। श्रद्धा और विश्वास के समकक्ष वह किसी भी परिवर्तन को अपनाना नहीं चाहते हैं।

परम्पराओं से चली आ रही बातों को छोड़ना नहीं चाहते। हमारे संस्कार ऐसा करने से रोकते हैं तथा कहीं न कहीं मन में एक प्रकार का भय भी होता है।

उत्तर 44 आज ईश्वर के नाम पर भी व्यापार चलता है। यदि आर्थिक चढ़ावा चढ़ाया जाय तो पुजारी की विशेष कृपा दृष्टि मिलती है वह ईश्वर की मूर्ति के नजदीक जाकर पूजा अर्चना आदि करा देते है। ईश्वर की कृपा दृष्टि तो श्रद्धा, विश्वास और आस्था पर निर्भर करती है।

कुटज

उत्तर 45 कर्म ही पूजा है। व्यक्ति के द्वारा किए गए अच्छे कार्यों से समाज में उनका सम्मान होता है।

अच्छे कार्यों के द्वारा व्यक्ति के प्रति अपनत्व की भावना जागृत होती है।

ऐसे व्यक्तियों को हम अपना आदर्श मानते है इसलिए उन जैसा बनने की कोशिश करते है।

ऐसे व्यक्ति मरकर भी अमर हो जाते है।

उत्तर 46 'कुटज' में स्वाबलंवन की शक्ति की शक्ति उसके ठिगने कद को बड़ा कर देती है। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि :

शारीरिक अक्षमताओं को हम अपने अच्छे गुणों से नगण्य बना सकते है जिससे वे अपने कुठाओं से उबरकर समाज में अपना यथोचित स्थान प्राप्त करते है।

दीन भावना से उबर सकते है।

समाज में उसके लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते है।

वे दया का पात्र नही बनते, बल्कि एक खुशहाल जीवन बिताते है।

उत्तर 47 रास्ते में आने वाले संकटो और संघर्षो का हॅसते हुए उनका सामना करना।

दुर्जनों और मूर्खो की बातों की परवाह न करते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा।

दूसरों के लिए स्वयं उदाहरण बनना।

संघर्षों से जूझते हुए मृत्यु से भयभीत न होना।

उत्तर 48 हमारे अंदर उत्साह की भावना को प्रेरित करती है।

सकारात्मक सोच से आनन्द का अनुभव होता है।

सीमित साधनों में अपने कार्य को सम्पन्न करना जिससे आत्मसंतुष्टि मिलती है।

संघर्ष में भी जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है ।

प्रत्येक परिस्थिति में प्रसन्न रहने की भावना का विकास होता है।

उत्तर 49 यह कदम समाज के हित में नहीं है क्योंकि चाटुकारिता के बल पर अक्षम व्यक्ति ऊँचे व गरिमामयी पदों पर बैठ कर उसका दुरूपयोग करेंगे।

वह विशेषज्ञ नहीं होंगे अपने अवगुणों को छिपाने के लिए मिथ्या ऑडबरों का सहारा लेंगे।

दूसरों के द्वारा किए गए कार्यों का श्रेय लेने की कोशिश करेगा, इससे समाज का विकास नहीं होगा। विद्वान लोगों को यथोचित सम्मान नहीं मिलेगा। समाज में असंतोष की भावना उभरेगी।

उत्तर 50 हॉ, हम इस कथन से सहमत है। कुटज का संदेश हमारी स्वावलंबन की भावना को जगाता है।

हमे विषम परिस्थितियों में भी शान के साथ जीने की प्रेरणा देता है।

हमारे आत्म विश्वास को बढ़ाता है। जिससे हम आत्म निर्भर हो सके।

हमारे गुणों को बढ़ाकर हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।

सभी परिस्थितियों में विशेषकर संकटों के समय विचलित होना नहीं सिखाता।

:: इति ::